आत्मिक युद्ध

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

1. परिचय : युद्ध का इतिहास

2. शानदार जीत

3. आज की परिस्थिति

4. शत्रु की युद्धनीति या प्रणाली

    क. विश्वासी के जीवन और सेवकाई पर आक्रमण करना

    ख. गढ़ बनाना – उसके नियंत्रण के क्षेत्र।
    - i) व्यक्तिगत गढ़
    - ii) पारिवारिक गढ़
    - iii) शहरों, जातियों, लोगों या राष्ट्रों का गढ़
    - iv) शैतानी धार्मिक गढ़
    - v) कलिसियाई गढ़

5. हमारा युद्ध

    क. पहले – बलवान मनुष्य को बांध दो

    ख. हमारे जीवन में दुष्ट बंध जाता है जब हम यीशु मसीह की आज्ञा मानते हैं

    ग. परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र – शस्त्र धारण कर लो। इफिसियों 6:11–17
    - i) सत्य से अपनी कमर कस लो
    - ii) धार्मिकता की झिलम पहिन लो
    - iii) पैरों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन लो
    - iv) विश्वास की ढाल
    - v) उद्धार का टोप

घ. युद्ध के लिए हमारे ईश्वरीय हथियार
i) प्रार्थना
ii) आत्मा की तलवार
iii) यीशु का नाम
iv) स्तुति की सामर्थ्य
v) प्रचार की सामर्थ्य
vi) साक्षी की सामर्थ्य
vii) उपवास की सामर्थ्य

6. व्यावहारिक – आत्मिक युद्ध

7. ग्रंथ – सूची

आत्मिक युद्ध

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

1. परिचय : युद्ध का इतिहास

क. आरंम्भ में – सृष्टि रचने के द्वारा सब कुछ परमेश्वर का है।
उत्पत्ति 1:1 भजन संहिता 24:1

ख. मनष्य को समस्त पृथ्वी पर अधिकार दिया गया।
उत्पत्ति 1:28 भजन संहिता 8:6 भजन संहिता 115:16

ग. शत्रु सामने आता है तथा अपनी युक्ति को प्रकट करता है :

i) कि उसका आसन ऊंचा किया जाए : उसकी आराधना हो सके

- यशायाह 14:12–17 अपने विद्रोह को पृथ्वी पर ले कर आया।
- उत्पत्ति 3 मनुष्य को धोखा देता है, तथा आदम और उसके राज्य को, शैतान और पाप की सामर्थ्य और अधिकार की अधीनता में ले आता है।
- परमेश्वर युद्ध की घोषणा करते हैं। उत्पत्ति 3:15

ii) कि क्षेत्रों को नियंत्रित करे तथा अपने राज्य का विस्तार करे।
लूका 4:5–6

iii) कि परमेश्वर के अनमोल ख़जाने को चुरा ले और नष्ट कर दे
योएल 3:5, 9–10 मत्ती 13:44 यूहन्ना 10:10 अ

2. शानदार जीत

क. यीशु का आगमन :

- फिलिप्पियों 2:6–7 : अपने को शुन्य कर दिया – अपना सिंहासन त्याग कर नीचे आ गया।
- कुलुस्सियों 2:13–15 : विजय

ख. इस संसार के शासक को निकाल देना यूहन्ना 12:31

मत्ती 12 :28 –29 : " परन्तु यदि मैं इस परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूं , तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में आ पहुंचा है। अथवा किसी बलवान मनुष्य के घर कोई उसकी <u>सम्पत्ति कैसे उठा ले जा सकता है</u> जब तक कि वह पहिले उस <u>बलवान को बांध</u> न ले ? और तब वह उसका घर लूटेगा।"

पहला : यीशु उस बलवान मनुष्य को बान्धता है – कैसे ??

- पाप हटा कर : यूहन्ना 1:29 ; 1 यूहन्ना 3:5
- अतः मृत्यु को पराजित कर : इब्रानियों 2:14
- शैतान को हरा कर : 1 यूहन्ना 3:8

दूसरा : यीशु उस बलवान मनुष्य के घर में घुसा और उसकी सम्पत्ति उठा ले आया।
उसके लहु से छुड़ाई सम्पत्ति – शैतान का घर लूटा हुआ।

- इफिसियों 4:8–9
- 1 पतरस 4:6 स्वर्ग छोड़ पृथ्वी पर उतर आया। (लूका 16:19–31) और फिर बन्धुओं के समुह के साथ ऊंचे पर चढ़ गया।

मत्ती 16:18 "मैं अपनी कलिसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।"

अधोलोक के फाटकों को तोड़ डाला !! (जैसे शिमशोन, न्यायियों 16:3)

पतन के बाद पहली बार स्वर्ग के फाटक खोल दिये।

भजन संहिता 24:7–10 "हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो ! हे सनातन द्वारों, ऊंचे हो जाओ कि प्रतापी राजा प्रवेश करे ! यह प्रतापी राजा कौन है ? यहोवा, जो सामर्थी और शक्तिशाली है, यहोवा जो युद्ध में पराक्रमी है। हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो ! हे सनातन द्वारों, तुम भी ऊंचे करो, कि प्रतापी राजा प्रवेश करे ! यह प्रतापी राजा कौन है ? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है। सेला।"

क्रूस की विजय, अन्धकार के राज्य की ताकत के ऊपर, परमेश्वर के राज्य की सामर्थ्य को स्थापित करती है।

3. आज की परिस्थिति

- फिलिप्पियों 2:9–11 अति महान किया और सारी सामर्थ्य दी।
- इब्रनियों 1:3 ; 2:8 "अब तक हम सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते।"
- इब्रानियों 10:12–13 "जा बैठा ... प्रतिक्षा ... जब तक ..."

राज्य अभी भी युद्ध पर हैं – संग्राम का रोष

एक संग्राम : बल – अधिकार – लोगों के लिए

- 1 यूहन्ना 5:19 "सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।"
- यूहन्ना 12:31 ; 14:30 ; 16:11 "संसार का शासक"
- रोमियों 16:20 जब हम सुसमाचार के साथ जातें हैं।

भजन संहिता 2:1–4 : "जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बात क्यों गढ़ते हैं ?
(उत्तर) यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा (प्रधानों और अधिकारियों) उठ खड़े हो कर, और शासक (मनुष्य) एक साथ मिलकर सम्मति करते हैं : "आओ, हम उनकी ज़ंजीरों को तोड़ डालें और उनके बन्धनों को अपने ऊपर से उतार फेंकें।"

यह युद्ध है ! "पृथ्वी के राजा" परमेश्वर के अभिषिक्त राजा के और उसके लोगों विरुद्ध।
इफिसियों 6:12 भजन संहिता 2:5–12

दुष्ट शक्तियों के ऊपर उसकी विजय और इस संसार में उसका उपयोग, अब कलिसिया के हाथों में है।

1 कुरिन्थियों 15:57 हमें विजयी कर दिया।

इफिसियों 3:10 : " कि अब कलिसिया के द्वारा परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो आकाश में हैं प्रकट किया जाए।"

शैतान के विरुद्ध उसकी घृणा और उसका आक्रमण अब हमारे द्वारा व्यक्त होनी चाहिए।

परमेश्वर ने लोगों का चुनाव किया कि अपने को उन पर प्रकट करे जो उसके सुसमाचार के प्रचारक बन कर उसका उद्धार, उसकी विजय इस जगत में लायें।

गलातियों 3:8 ; प्रेरितों के काम 13:47 (यशायाह 49:6) ; रोमियों 1:16

- यीशु ने सुसमाचार इस्राएल से ले लिया और कलिसिया को दे दिया।
  मत्ती 21:33–43 तथा 23:37

नीतिवचन 8:13 : "यहोवा का भय मानना, बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार तथा बुरी बात और कुटिल बातों से मुझे घृणा है।"

निदान सूचक प्रश्न :

1. क्या मेरा जीवन, शैतान के लिए परमेश्वर की घृणा को व्यक्त करता है ?
2. क्या मेरा जीवन पाप के प्रति पूर्ण घृणा को, और परमेश्वर के मार्ग और धार्मिकता के लिए प्रेम और सर्मपण को व्यक्त करता है ?
3. क्या मैं स्वीकृत किए जाने के लिए असानी से समझौता कर लेता हूं ?
4. क्या मेरी सबसे बड़ी अभिलाषा और इच्छा यह है कि मै किसी भी कीमत पर यीशु को भावता रहूं ?
5. क्या मैं अच्छे सिपाही के समान सदैव तैयार और आज्ञा मानने के लिए तैयार रहता हूं ?
6. जब मैं लोगों को देखता हूं तो क्या मेरा हृदय करुणा से भर जाता है, क्योंकि शैतान उन्हें नाश कर रहा है ?

रोमियों 12:9 " प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे रहो।"

रोमियों 12:21 " बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।"

4. शत्रु की युद्धनीति या प्रणाली

सभोपदेशक 9:14–18

" एक छोटा सा नगर था जिसमें मुट्ठी – भर लोग रहते थे। एक बड़े राजा ने आ कर उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध विशाल मोर्चाबन्दी कर ली। परन्तु उनमें एक गरीब बुद्धिमान व्यक्ति पाया गया और उसने अपनी बुद्धिमानी से उस नगर को बचा लिया। फिर भी किसी ने उस गरीब का स्मरण नहीं किया। अतः मैने कहा, " बुद्धि शक्ति से श्रेष्ठ है।" परन्तु गरीब मनुष्य की बुद्धि तुच्छ समझी जाती, और उसके वचनों पर ध्यान नहीं दिया जाता। शान्ति में सुने गए बुद्धिमान के वचन मुर्खों के मध्य शासक की चिल्लाहट से अधिक अच्छे हैं। युद्ध के अस्त्र – शस्त्रों से बुद्धि उत्तम है ; परन्तु एक पापी बहुत से अच्छे कार्यों को नाश कर देता है।"

युद्ध में अपने शत्रु को जानना और समझना बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। नीतिवचन 24:5–6

क. विश्वासी के जीवन और सेवकाई पर आक्रमण करना

1. आपको जाने से रोकता है : 1 थिस्सलुनीकियों 2:18
2. परिक्षाएं : लूका 4:1–13 ; याकूब 1:13–16 ;
   यूहन्ना 14:30 "...मुझमें उसका कुछ नहीं।"
3. झूठ और धोखा दे कर संदेह लाता है

क)	यूहन्ना 8:44	"झूठ का पिता"
ख)	2 कुरिन्थियों 11:3	हव्वा को धोखा दिया
ग)	2 कुरिन्थियों 11:13–14	ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप
घ)	1 तीमुथियुस 4:1 ; 2 तीमुथियुस 2:24–26	बहुतों को भरमाने वाला
ङ)	प्रकाशितवाक्य 20:3,8	जातियों को धोखा देने वाला

4. आरोप लगाता और दोषी ठहराता है : प्रकाशितवाक्य 12:10 ; रोमियों 8:1
5. बिमारी : लूका 13:10–17 (पद 11,16)
6. सताव : 2 कुरिन्थियों 11:23–27 ; मत्ती 5:11, 44 ; यूहन्ना 15:20
7. प्रार्थना में बाधाएं लाता है : दानिय्येल 10:2–6, 12, 20–21 ।
8. आपको ठण्डा, स्वार्थी, आलसी, अपने से सन्तुष्ट रहने वाला बना देता है।
   मत्ती 24:12 ; यहेज़केल 9:4 ; प्रकाशितवाक्य 3:15–19
9. चोरी, हत्या, और नष्ट करने। यूहन्ना 10:10
   1 पतरस 5:8 "गर्जन वाला सिंह"

मत्ती 13:19 वचन चुराता है
लूका 11:14 दूष्टात्मा बोलने से रोकता है
मत्ती 12:22 दूष्टात्मा देखने और बोलने से रोकती है
मरकुस 9:22 "उसने इसे नाश करने के लिए कभी आग में तो कभी पानी में गिराया। परन्तु यदि तू कुछ कर सकता है तो हम पर तरस खा कर हमारी सहाायता कर।"
यूहन्ना 5:5, 14 : "वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से बिमार था। इसके पश्चात यीशु ने उसे मन्दिर में पा कर उस से कहा, " देख तू स्वस्थ हो गया है, फिर कभी पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे भी भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"

भजन संहिता 97:10 " तुम जो यहोवा से प्रेम रखते हो, बुराई से घृणा करो। वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता, और उन्हें दुष्टों के हाथ से छुड़ाता है।"

ख. गढ़ बनाना – उसके नियंत्रण के क्षेत्र।

2 कुरिन्थियों 10:3–4
जो उसके नियंत्रण मैं नहीं है इसे प्राप्त करने का वह भरसक प्रयत्न करता है।

1. व्यक्तिगत गढ़ – जिस तरह से हम सोचते हैं – विश्वास
शैतान हमें प्रभावित करने के द्वारा आरंम्भ करता है, विचारों व कार्य का एक नमूना स्थापित करता है और फिर धीरे धीरे उस क्षेत्र को नियंत्रित करने लगता है तथा यहां से वह अपने राज्य का विस्तार करता है। 2 कुरिन्थियों 10:5–6

क) संसारिक मूल्य
मत्ती 16:21–23 लूका 16:14–15मरकुस 4:18–19
याकूब 4:4 1 यूहन्ना 2:14–17

ख) घमण्ड याकूब 4:5–10 ; 1 पतरस 5:5–9 ; यशायाह 2:10–17

पतरस के पास घमण्ड का व्यक्तिगत गढ़ था : लूका 22:31–32

घमण्ड ने शैतान को वैध अधिकार दिया कि पतरस पर आक्रमण करे। पद 24

पतरस का स्वभाव जानते हुए, वह अपनी बात में विजयी हुआ। शैतान ने प्रहार किया और 'मज़बूत' पतरस ने प्रभु का तीन बार इनकार किया। प्रभु ने इसके द्वारा भला कार्य किया (रोमियों 8:28)। इससे पतरस का घमण्ड टूट गया। (लूका 22:61–62) उसने जाना कि उसका बल प्रयाप्त नहीं है। यीशु ने उसे पुनःस्थापित किया (यूहन्ना 21:15–17 ; प्रकाशितवाक्य 12:11)

ग) न क्षमा करने वाला 2 कुरिन्थियों 2:10–11 इब्रानियों 12:15
मत्ती 7:1 मत्ती 18:21–35

घ) क्रोध, झूठ, चोरी, अश्लील शब्द, निन्दा, कड़वाहट, ईर्ष्या, स्वार्थी अभिलाषाएं : इफिसियों 4:25–32 ; याकूब 3:1–16 ; 4:11–12

ङ) शारीरिक वासनाऐं गलातियों 5:19:21 1 पतरस 2:11–12

1 तीमुथियुस 3:7 "कलिसिया के बाहर के लोगों में वह सुनामी हो, कहीं ऐसा न हो कि किसी दोष में पड़कर वह शैतान के फंदे में फंस जाए।"

2 तीमुथियुस 2:26 "और सचेत हो कर शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है।"

इफिसियों 5:1–13 कुलुस्सियों 3:1–10

अपने राज्य का विस्तार करता है :

2. पारिवारिक गढ़ – व्यक्तिगत गढ़ों का परिणाम

बाप दादाओं के पाप, अर्धम उत्पन्न करते हैं या किसी खास पाप की तरफ कमज़ोरी ले कर आतें हैं।

क) जैसे कैन ने हत्या की, वैसे ही उसके पोतों ने भी की उत्पत्ति 4:23–24

ख) इब्राहीम अपनी पत्नी के विषय झूठ बोला। उत्पत्ति 12:13 ; 20:2
इसहाक अपनी पत्नी के विषय झूठ बोला। उत्पत्ति 26:7
याकूब जाना हुआ धोखेबाज़ था।

ग) बुरे धर्म और मूर्ती पूजा : लैव्यव्यवस्था 20:5
"तो मैं स्वयं उस व्यक्ति के और उसके घराने के विरुद्ध होकर उसको और उन सब को जो उसका साथ देकर और मोलेक के पीछे चल कर वेश्या सदृश व्यवहार में लगें हैं, उनके लोगों में से मिटा डालूंगा।"

घ) लोभ – धन से प्रेम – भ्रष्ट
एली और उसके दुष्ट पुत्र : 1 शमूएल 2:29 ; 3:13

अपने राज्य का विस्तार करता है :

3. शहरों, जातियों, लोगों या राष्ट्रों का गढ़

जब लोग समुह के रुप में अपने को दुष्टता के सिद्धान्त या पाप के हवाले कर देते हैं, तो यह शैतान को "वैध अधिकार देता है कि वह उनके क्षेत्र पर कब्ज़ा जमा ले।

पाप जो राष्ट्र और भूमि को अशुद्ध करते हैं।

- यौन सम्बन्धी पाप लैव्यव्यवस्था 18:1–30 ; पद 24–30
  पद 24 : व्यक्ति अशुद्ध होता है , जाति और भूमि अशुद्ध।
  पद 25 : देश अपने निवासियों को उगल देता है।
  लैव्यव्यवस्था 19:29 : वेश्यावृत्ति पूरे देश को अशुद्ध करती है।
- मूर्तिपूजा भजन संहिता 106:34–38 (1) मूर्तियों की सेवा की (2) बेटे बेटियों को बलि चढ़ाया (3) निर्दोष का लहू बहाया – देश अपवित्र हो गया।
- जादू–टोना व्यवस्थाविवरण 18:9–14
- हत्या – लोगों की जान लेना
  उत्पत्ति 4:9–12 ; गिनती 35:33–34 ; व्यवस्थाविवरण 21:1–9 ; इब्रानियों 12:24

क्षेत्र जो परमेश्वर ने उन्हें दिए थे, उन्होंने शैतान को दे दिये जब उन्हों ने पाप में शैतान की आज्ञा मानी।
जैसे : प्रेरितों के काम 17:26 ; व्यवस्थाविवरण 32:8

- आदम शैतान को अपना अधिकार क्षेत्र खो बैठा।
- सैन फ्रैन्सीसको समलिंग कामुकता के कारण जाना जाता है।
- शिकागो हिंसक भीड़ के लिए जाना जाता है।
- लास वेगास जुअे और लालच के लिए जाना जाता है
- कोलकत्ता की देवी "काली" मृत्यु की देवी है।
- इफिसुस का भगवान "डायना" जादुगरी और शकुन विचार के लिए जानी जाती है।
- हिन्दुओं के भगवान करोड़ों हैं।

शहर, जाति, और लोग भी नियंत्रित किए जा सकते है तथा बुरी आत्मिकता की भी पहचान की जा सकती है।

- मत्ती 11:20–24 : प्रत्येक नगर को कहा गया कि वो अपने कार्य के लिये ज़िम्मेवार है।
- इब्रानियों 11:10 : कोई नगर या राष्ट्र किस आत्मिक नींव पर बना है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है।
- हबक्कूक 2:12
- नहूम 3:1

इसमें सारी संसकृति को प्रभावित करने की क्षमता होती है। शैतान लोगों के ऐसे नेताओं को ढूंढता है जो उसकी सेवा करे, और बदले में वह उन्हे सत्ता दे दे।

क) "सूर के शासक" (पृथ्वी पर) और "सूर के राजा" (आकाश में)
यहेजकेल 28:2,12

क) "फारस का प्रधान" और "फारस का राजा" दानिय्येल 10:20
आज भी सदाम हुसैन को बल दे रहा है।

ख) अदोल्फ हिटलर के पास जादुई शक्ति थी, जिसके कारण उसने सारे देश को वश में कर लिया। यह जाना गया है कि अदोल्फ हिटलर खुल्लम–खुल्ला इन अन्धकार की शक्तियों को अपने पास बुलाया करता था।
यह आत्मा आज भी जर्मनी को प्रभावित कर रहा है।

यशायाह 24:21 : " उस दिन ऐसा होगा कि यहोवा आकाश की सेना को आकाश में तथा पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी पर दण्ड देगा।"

4. धार्मिक गढ़

परमेश्वर के प्रकाशन को त्याग कर लोग इसको स्थापित करते हैं और दुष्ट आत्माओं की पूजा या सेवा करने लगते हैं ताकि उनकी स्थिति बहतर हो और आत्मिक ज़रुरतें पूरी हो जाए।

2 कुरिन्थियों 11:14 : " इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण कर लेता है।"

इन दुष्टात्माओं के राजाओं ने अपना राज सदियों से बना रखा है :

क) धार्मिक उत्सवों, धर्मानुष्ठान और तीर्थयात्रा। आत्मिक शक्तियां इन कार्यो के द्वारा खुल जाती हैं जो बहुतों ने प्रमाणित किया है ; अत्याचार का बढ़ जाना, सताव, शैतानी चिह्न व चमत्कार।
जैसे : इस्लामी हज यात्रा ; भारत में कुम्भ मेला, इत्यादि।

ख) अपने पूर्वजों और बाप–दादाओं के द्वारा किया गया चुनाव और वाचाओं को वे पुनःसमर्थन करते हैं, तथा शैतान के वैध अधिकार को फैलातें हैं कि उन के खास क्षेत्र और लोगों पर शासन करे।

ग) इन धार्मिक उत्सवों, धर्मानुष्ठानों और तीर्थयात्राओं को "परम्परा" कहतें हैं। परम्पराएं क्षेत्रिय साम्राज्य बनाए रखती है।

घ) जादुगरी, शैतानी पूजा और नए युग के धर्म आत्माओं को आमंत्रित करते हैं कि वो सम्मोहन, शाप, रीति रिवाज़ों और पूजा वस्तु के द्वारा उनका संचालन की अगुवाई करे तथा क्षेत्रिय आत्माओं को बल दे।

- व्यवस्थाविवरण 18:9–14
- 1 कुरिन्थियों 10:20–21
- 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1

शैतान को खासतौर पर बल मिलता है जब पाप में शामिल होता है :

लहू का बहाया जाना और यौन–विकृति
दोनो ही वाचा बनने में शामिल है।

क) लहू : भजन संहिता 106:35–38 "बेटे बेटियों को दुष्टात्माओं के लिए बलिदान किया।"
गिनती 35:33 ; उत्पत्ति 4:10–12
इब्रानियों 12:24 " तथा नई वाचा के मध्यस्थ यीशु के और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम बातें कहता है।"

हाबिल का लहू, न्याय के लिए पुकारा।
यीशु का लहू, क्षमा के लिए पुकारा।

ख) यौन :	उत्पत्ति 6:1–7	कठोर दण्ड
	उत्पत्ति 18:20 ; 19:4–9	कठोर दण्ड
	रोमियों 1:23–32 पद 27	कठोर दण्ड

उदाहरण : 1990 में जीन बर्टान्ड अरिस्टाइड हैत्ती देश का राष्ट्रपति बना। 14 अगस्त 1991 में उसने अधिकारिक तौर पर हैत्ती के उच्च वूडडू विशेषज्ञों से निवेदन किया कि वो बुकमान्न के वूड्डू समारोह की राष्ट्रीय प्रथा की अगुवाई करते हुए हैत्ती राष्ट्र को मृतकों की आत्माओं को समर्पित करें। इस समारोह में पशु बलि, कुछ के अनुसार मनुष्य बलि भी शामिल होती है। एक महीने के बाद, 29 सितम्बर 1991 में सेना ने सत्ता पलट कर उसे निकाल फेंका। हैत्ती का समाजिक – आर्थिक पत्तन हो गया। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिरोध लगा दिया गया। समान्य अर्थव्यवस्था नहीं के बराबर हो गई। हज़ारों की संख्या में लोगों के व्यवसाय बंद हो गए। लोग स्थायी बेरोज़गार हो गए। सत्ता परिवर्त्तन के कुछ महीनों के बाद यह खबर आई, " पोर्ट –ओ–प्रिंस,साधारण समय का एक चहल पहल वाला शहर, अब विरान भूतहा शहर में बदल गया है।" पैट्रोल गैस न मिलने की वजह से यातायात ठप्प पड़ गया तथा सड़कों पर कूड़ों का अम्बार लग गया। विदेशी निवेशकों ने हैत्ती को पूरी तरह छोड़ दिया। राष्ट्र में मनुष्य की दुर्दशा निम्नतम स्तर पर पहुंच गई।

प्राकृतिक और आत्मिक के मध्य क्या कोई परस्पर सम्बन्ध था?

क्षेत्र पर कब्ज़े के लिए शत्रु द्वारा उठाये कदम :

1. वैध द्वार को तलाशा तथा प्रवेश किया।
2. दिवार खड़ी की।
3. "द्वार" में बैठा।

5. कलिसियाई गढ़

समुदायिक विश्वास : (समुदाय – एक बड़े समुह में लोगों का समुह जिनका बाकी के दुसरे लागों से भिन्न दृष्टिकोण होता है)

क) कलिसियाओं में विभाजन

ख) सिद्धांत और विश्वास में घमण्ड

ग) समुदाय या विशेष आस्था की मूर्तिपूजा जिसके कारण वह देह के बाकी अंगों से अलग हो जाते हैं।

घ) नगर की ओर "हम और वो" वाली मानसिकता।

5. हमारा युद्ध

क. सबसे पहिले – बलवान मनुष्य को बांध लें

> मत्ती 12 :28 –29 : " परन्तु यदि मैं इस परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में आ पहुंचा है। अथवा किसी बलवान मनुष्य के घर कोई उसकी सम्पत्ति कैसे उठा ले जा सकता है जब तक कि वह पहिले उस बलवान को बांध न ले ? और तब तक वह उसका घर लूटेगा।"

परमेश्वर के राज्य की उन्नति के साथ जुड़ा है "दुष्टात्माओं को निकालना।"

"बलवान" – दुष्ट आत्मा या आत्माएं, "राजा", जो घर पर कब्ज़ा जमाता और नियंत्रित करता है।

"बलवान मनुष्य का घर" या "गढ़" या "क्षेत्र" कोई व्यक्ति, परिवार, समुदाय, लोग, राष्ट्र या भौगोलिक क्षेत्र है जिसे दुष्ट आत्मा या आत्माएं घेर लेती तथा कब्जे में ले लेती हैं।

मत्ती 12:29 "पहिले उस बलवान को बांध लें।"

मत्ती 18:18 : " मैं तुम से कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। और जो कुछ भी तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।

स्ट्रोंग का शब्दानुक्रमणिका # 1210: डियो (s) बांधना

1) बांध देना, या कस देना
   - क) बांध देना, बेड़ियों में जकड़ देना, बेड़ियों में फेंक देना
   - ख) लाक्षणिक :
     1) बांध देना, बन्धन में डाल देना, कानून का प्रयोग
     2) रोकना, वर्जित करना, अवैध घोषित कर देना।

स्ट्रोंग का शब्दानुक्रमणिका # 3089: ल्युो (s) खोल देना

1) बंधे या जकड़े किसी व्यक्ति (या वस्तु) को खोल देना।
2) किसी बंधे को खोल देना, यानि कि, बंधनों को खोल कर मुक्त करना, स्वतंन्त्र कर देना।
   - क) कैद से छूटना, जाने देना।
   - ख) समाप्त कर देना, अधिकार से हटा देना।
   - ग) गैर कानूनी घोषित कर देना।

कैसे ?

ख. हमारे जीवन में दुष्ट बंध जाता है जब हम – यीशु मसीह की आज्ञा मानते हैं

यीशु ने शैतान को बांधा जब उसने :

1. वचन का आज्ञापालन किया : " लिखा है " लूका 4:4, 8, 12
2. पिता का आज्ञापालन किया : यूहन्ना 5:19, 30 ; 14:30 " मुझ पर नहीं "

यह बलवान मनुष्य हमारे जीवन में बंध जाता है, सामर्थ हीन हो जाता है जब यीशु मसीह और उसके वचन की आज्ञापालन करते हैं।

- यहोशू 5:13–15 "यहोवा की सेना के सेनाध्यक्ष" को समर्पण कर दें।
- यहोशू 6:2 ; 7:11–13 खेमें में पाप के साथ आप अपने शत्रु से नहीं लड़ सकते।
- मिस्त्र अन्धकार का राज्य / शैतान और पाप का गुलाम।
- जंगल पाप के साथ युद्ध अंदर / देह के साथ
- प्रतिज्ञा किया देश प्रधानों और अधिकारियों के साथ युद्ध

पहला युद्ध जो मुझे जीतना है : जंगल में विजय

अपनी देह पर विजय

1 कुरिन्थियों 10:6 : "यह बातें हमारे लिए उदाहरण ठहरीं कि हम भी <u>बुरी बातों की लालसा न करें</u>, जैसे कि उन्होंने की थी।

व्यवस्थाविवरण 8

पद 1 : आज्ञाकारिता आवश्यक है

- जीवन के लिए
- भूमि प्राप्त करने के लिए

पद 2 : जंगल का उद्देश्य

- ताकि हम दीन बनें। हमारा घमण्ड टूटना चाहिए।
- ताकि हमें जांचें। यह जानें कि हमारे हृदय में क्या है ?

परमेश्वर का पहला और सर्वप्रथम चिन्ता, <u>सदगुण और चरित्र</u> के लिए है।

जंगल थे :

क) एक पूरी पीढ़ी के लिए मरण का स्थान, जो लगातार कुड़कुडाते, शिकायत करते, कड़वाहट उत्पन्न करते रहे और परमेश्वर की आज्ञा और उस पर भरोसा करना न सीखा। वे हमेशा उसी परिचित और पुरानी राह पर लौट जाना चाहते थे। गिनती 14:20–24

ख) वही जंगल एक पूरी पीढ़ी के जीवन का स्थान था, जिनका जन्म और पालन पोषण उस सारी कठोरता में हुआ था। कुछ न जानते हुए सिवाय ऊसरता और कठिनाई के, उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करना और आज्ञा मानना सिखा तथा बदल जाने के लिए तैयार थे। आगे बढ़ने के लिए तैयार। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के लिए लड़ने को तैयार।

यह आपका निर्णय है – कठिनाईयों मे आपका जवाब जो निर्धारित करती है यह आपके जीवन या मृत्यु का स्थान है।
गलातियों 5:17 ; लूका 9:23 ; रोमियों 6

इस युद्ध का जीतें – आज्ञा मानना सिखें। तब मै तैयार हूं यर्दन पार करने और प्रधानों और अधिकारियों के साथ आत्मिक युद्ध आरम्भ करने के लिए तथा भूमि को परमेश्वर के राज्य के लिए वापस लेने के लिए।

परमेश्वर का राज्य – प्रभुत्व – शासित होना था

आज्ञाकारिता आपको अधिकारी के नीचे रख देती है।

यदि हम उसकी आज्ञा नहीं मानते, तो वह हमें शत्रु के जाल से बचा नहीं सकता। मत्ती 7:24–27

हमारी आज्ञाकारिता शैतान को बांधती है और वह हमें छू भी नहीं सकता। 1 यूहन्ना 5:18

"उद्धार का काम पूरे करते जाने" का यही अर्थ है। फिलिप्पियों 2:12

लूका 6:46–49 " जो मैं कहता हूं जब तुम उसे नहीं मानते तो मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु' क्यों कहते हो ?"

यीशु का संदेश : मन फिराओ क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है। मरकुस 1:14–15

आज्ञाकारिता की मांग

पश्चात्ताप है : (क) स्वयं को नम्र करना (ख) मुड़ जाना – अपने जीवन का रुख बदल लेना।

पश्चात्ताप आज्ञाकारिता का निर्णय है। मनुष्य की इच्छा का जवाब।

"तेरा राज्य आए!" कैसे ? "तेरी इच्छा पूरी हो"

परमेश्वर के राज्य की एक मांग है : मन फिराओ ! मुड़ो ! समर्पण !

मीका 6:8 ; याकूब 4:6–10 ; 1 पतरस 5:5–9 (2 इतिहास 32:24–26 ; 33:10–13)

पहिले परमेश्वर के राज्य की खोज करो। कैसे ? राजा की आज्ञा मान कर

हम दो बात सीखते हैं : 1. "परमेश्वर के अधीन" तथा 2. "शैतान का सामना"
याकूब 4:6–8 ; 1 पतरस 5:5–9

शाऊल का आज्ञोल्लंघन : 1 शमूएल 15:1–3, 9–23

स्वीकार किया परन्तु पश्चात्ताप नहीं : पद 24, 30
नेतृत्व के पद से हटा दिया : पद 26–29
यहोवा का आत्मा चला गया : 16:14 ; 18:10–11
आज्ञा न मान कर उसने दुष्ट आत्मा को परेशान करने का न्यौता दिया :
रोमियों 6:16 ; प्रेरितों के काम 5:32 ; इफिसियों 4:27

शैतान के विरुद्ध परमेश्वर का युद्ध ज़ारी है, परमेस्वर के अधीन लोगों के द्वारा जो शैतान का सामना हर कीमत पर बल देते हुए करते हैं :

"तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।"

भजन संहिता 34:12–17

आज्ञा मानने में आवश्यक है कि हम :

ग. परमेश्वर के समस्त अस्त्र शस्त्र धारण कर लें : इफिसियों 6:11–17

हमले से अपने क्षेत्र की रक्षा करना – परमेश्वर के लिए गढ़ बनाना।

1. सत्य से अपनी कमर कस लो : यूहन्ना 8:31–32 ; 14:6 ; भजन संहिता 119:160

- वह कौन है : प्रभु – अधिकारी – ज्ञान – प्रेम – अनुग्रह
- जो उसने किया और करेगा
- हमेशा सच बोलें । झूठ पराजय के लिए द्वार खोलता है।

भजन संहिता 15:1–2 ; इफिसियों 4:15, 24–27 ; कुलुस्सियों 3:9
यूहन्ना 8:44 "... का पिता" ; प्रेरितों के काम 5:1–5 : हनन्याह और सफीरा

2. धार्मिकता की झिलम : हृदय की रक्षा करती है। नीतिवचन 4:23 ; मत्ती 15:18–19 ; 1 शमूएल 16:7।

पहले : परमेश्वर की धार्मिकता में पूर्ण विश्वास।
फिलिप्पियों 3:9 ; 2 कुरिन्थियों 5:21 ; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8

फिर : " तुम पवित्र बनों " पवित्रता का जीवन। 1 पतरस 1:13–16

इफिसियों 4:24 ; 1 तीमुथियुस 6:11 ; 1 यूहन्ना 2:29 ; 3:3, 7, 10

यहोशु 5:13–15 "अपने पैरों से जूतियां उतार ले ...।"

विजयी जीवन आरम्भ होता है पवित्र जीवन के साथ।

"उसने हमें अन्धकार के अधिकार से छुड़ा लिया है।"

किसी अन्धकार को सहना शैतान को वैध अधिकार देता है (इफिसियों 4:27) कि हम पर आक्रमण करे और हमारी चीज़ें चुरा ले।

लूका 11:35–36 : "अतः सर्तक रह कि तेरी ज्योति अन्धकार न बन जाए।"

शैतान अन्धकार के किसी भी भाग में चल सकता है। जहां भी परमेश्वर के वचन की अवाज्ञा होती है , वहां आत्मिक अन्धकार होता है और दुष्टात्माओं के कार्य की सम्भावना।

केवल वही जो शुद्ध हृदय का और बुराई से घृणा करता है, शत्रुओं के क्षेत्र में अज़ादी से तथा बिना छेड़खानी के घूम सकता है। भजन संहिता 97:10 ; नीतिवचन 8:13

उदाहरण : पतरस – तीन बार इनकार।
उसको भय नहीं था, कान काट दिए।

लूका 22:24, 31–32 घमण्ड शैतान का खुला दरवाज़ा देता है। असफलता (याकूब 4:6–7)

परिणाम : दीनता प्रेरितों के काम 3:12 ब

क्योंकि यीशु हमारा मध्यस्थ है इसलिए हमारा " विश्वास असफल नहीं होता" (पद 32) मेरे विचार, कार्य एक क्षण को असफल हो सकते हैं, परन्तु मेरा विश्वास कभी असफल नहीं होता! उसकी मध्यस्थता मेरे हृदय की रखवाली करता है। यूहन्ना 17:12 ; 18:9 ; इब्रानियों 7:25

इससे पहले कि हम युद्ध में जाएं, यह स्मरण रखें – वो क्षेत्र जिन्हें हम अन्धकार में छुपा देतें हैं वही भविष्य में हमारी पराजय बन जातें हैं। 1 पतरस 5:5–9

विजय के लिए आवश्यक है उसकी उपस्थिति।
निर्गमन 33:14 ; भजन संहिता 15 ; 24:3–6 ; व्यवस्थाविवरण 23:14

अपने हृदय में यीशु के चरित्र के साथ विजय का आरम्भ होता है। (आत्मा का फल)

तीमुथियुस को पौलुस, एक सिपाही : 1 तीमुथियुस 1:5, 19 ; 3:9 ; 4:1–2
2 तीमुथियुस 1:3 ; 1 पतरस 3:16, 18, 21

शुद्ध विवेक पर शैतान दोष नहीं लगा सकता और न ही दोषी ठहरा सकता।

3. पैरों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूतें पहिन कर :

कहीं भी जाने को, कभी भी प्रचार करने को तैयार और इच्छुक। गतिशील
मरकुस 16:15 : "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो।"

4. विश्वास की ढाल

बचाव : नीतिवचन 30:5 ; 2:7 ; भजन 3:3 ; 28:7 ; रोमियों 10:17

आक्रमण के समय परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करते हुए परमेश्वर पर भरोसा रखना कि शैतान के झूठ और भ्रम का सामना कर सकें।

हमला : उन्नति के लिए इस्तमाल करें – ताकि आगे जायें।
इब्रानियों 11:1, 33–34 ; भजन संहिता 37 : 3, 5 ; 1 यूहन्ना 5:4–5

5. उद्धार का टोप
हमारे बुद्धि की रक्षा (रणभूमि)

2 कुरिन्थियों 4:4 " उन अविश्वासियों की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर नें अन्धा कर दिया है कि वे परमेश्वर के प्रतिरुप, अर्थात मसीह के तेजोमय सुसमाचार की ज्योति को, न देख सकें।

2 कुरिन्थियों 10:4–5 : "क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं। हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली कल्पनाओं और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं, और प्रत्येक विचार को बन्दी बना कर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

हर जगह की सुरक्षा सिवाय ..... पीछे के।

1. कभी अपनी पीठ न फेरें, कभी न त्यागें, न कभी हिम्मत हारें। ढिलाई नहीं
2. पैदल रोमी सिपाही अपने नज़दीक के रैंक वालों के साथ मिलकर लड़ते थे, साथ साथ, ढालें आपस में जुड़ी हुई। उसकी देह, उसकी सेना में अपना स्थान पाईये। साथ खड़े हो जाएं।

घ. हमारे ईश्वरीय हथियार 2 कुरिन्थियों 10:3–5

"क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार .....गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं।"

1. द्वार / फाटकों को खोलने और बन्द करने की कूंजी प्रार्थना है।
प्रार्थना के द्वारा हम फाटक को नियंत्रण में रखते हैं – खोलना या बन्द

हमारे को कूंजी / अधिकार देने के द्वारा – उसने अपने कुछ कार्यों को, अपने लोगों की प्रार्थनाओं के जवाब के रुप में सीमित कर दिया।

जब तक हम प्रार्थना नहीं करेंगे, वह कार्य नहीं करेगा। क्यों ???

1 कुरिन्थियों 3:9 "क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं।"

परमेश्वर ने असल में पृथ्वी का सारा अधिकार मनुष्य को दिया। इसको कभी रद्द नहीं किया गया।
उत्पत्ति 1:28 ; भजन संहिता 115:16 ; 8:4–8 ; इब्रानियों 2:5–8

स्वर्ग चाहता है फिर प्रतिक्षा करता है : इब्रानियों 10:13

प्रतिक्षा करता है ..... मनुष्य हो जाये :
बहुत क्रोधित
बहुत बिमार
बहुत थका
बहुत हताश कि प्रार्थना करे

परमेश्वर के साथ सहमत होना ⇨ बहुत है बहुत।

दूसरों के लिए दरार के बीच खड़ा होना ⇨ प्रार्थना करने की चिन्ता करने वाला काई नहीं मिला।
यशायाह 59:16 ; 63:5 ; यहेजकेल 22:30

क) प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारें : तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो।

उसको उस परिस्थिति में आमंत्रित करें। प्रकाशितवाक्य 3:20

यह निवेदन है : अन्धकार के राज्य की अराजकता के स्थान पर उसका राज्य आए।

इसका अर्थ है : प्रार्थना :

- लोगों से सम्बन्धित उसकी इच्छा
  - इफिसियों 6:18
  - याकूब 5:14–18

- हमारे नगरों व राष्ट्रों से सम्बन्धित उसकी इच्छा
  - 1 तीमुथियुस 2:1–8
  - उत्पत्ति 18:26 ; मत्ती 5:13 जैसे लूत को "बाहर निकाला"
  - उत्पत्ति 19:8, 14, 16 प्रार्थना नहीं, गवाही नहीं, परिवर्त्तन नहीं।
  - यिर्मयाह 29:7
  - 2 इतिहास 7:14 भजन संहिता 2 : 8 ; 111:6

प्रत्येक परिस्थिति में उसकी इच्छा जानिए। प्रार्थना में उसे सजीव कर दें।
यशायाह 9:7 " उसकी प्रभुता की बढ़ती का अन्त न होगा।"

ख) प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारें – हे प्रभु, अपने लोगों पर करुणा कर।
योएल 2:17 निर्गमन 2:23–25 ; 3:7–9
भजन संहिता 107:6, 13, 19, 28 ; 50:15 ; 72:12 तथा नीतिवचन 21:13

ग) प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारें कि वह अपना पवित्र हाथ आगे बढ़ाये।
- निर्गमन 15:3, 6, 12
- यशायाह 50:2 ; 51:9 ; 52:10

घ) मध्यस्थता में परमेश्वर को पुकारें : इब्रानियों 4:14–16

दानिय्येल का उदाहरण
दानिय्येल 9:3 : " अतः मैने यहोवा परमेश्वर की ओर अपना मूंह किया कि उपवास के साथ, टाट पहनकर और राख में बैठकर तथा गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करते हुए उसकी खोज करुं।"

1. "परमेश्वर की ओर अपना मूंह किया" दृढ़निश्चय , बहुत विचार किया, बहुत पवित्र शास्त्र को पढ़ा। अपना मन बनाया। तैयार हुआ खोजने के लिए और लगातार खोजते रहने के लिए।

2. "उपवास के साथ, टाट पहनकर और राख में बैठकर" उसके प्राण नम्र हुए और उसने पश्चात्ताप किया।
दानिय्येल 9:4–16 : "... हमने तो पाप किया ..." पद 5

3. हमारा इन सब श्रेणियों के पापों का अंगीकार करना आवश्यक है।
दानिय्येल अपने लोगों के विषय में बोल रहा था ; "हमने तो पाप किया"
लोगों में से विश्वासी को राष्ट्र के पापों का अंगीकार करना चाहिए।

4. परमेश्वर के कार्यों और न्याय से वह सहमत हुआ। दया की तरफ यह पहला कदम है।

5. जो कुछ भी हमारे साथ होता है पाप का परिणाम है। हम वो काटते हैं जो हमने बोया है।

6. जब हम परमेश्वर के साथ और उसके न्याय से असहमत होते हैं हम विद्रोह करते हैं और पाप, शैतान के द्वारा भ्रमित किए जाने का द्वार खोल देता है।

दानिय्येल 9:17–19 " अतः हे परमेश्वर अपने दास की विनती और गिड़गिड़ाहट को सुन और हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त अपने उजड़े हुए पवित्र स्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका।"
दानिय्येल 9:20–27 जिब्राईल उत्तर लाता है।
दानिय्येल 10:12–14 जिब्राईल उत्तर लाता है परन्तु "फारस राज्य के प्रधान" ने 21 दिनों तक उसे रोके रखा। प्रायः जब हम प्रार्थना करते हैं तो आकाश में युद्ध होता है।

ड▪) अन्धकार को पीछे खदेड़ना – परमेश्वर के राज्य का विस्तार
सीमाओं की स्थापना। गिनती 33:50–55 ; यहोशु 1:3 ; 6:2

मध्यस्थता (पाघा) का अर्थ है : जो प्रभु का है और जिसे शैतान ने चुरा लिया था और अपना कह कर झूठा दावा करता है, उसे उससे वापस ले लेना। यहोशु 19:11, 22, 26, 27, 34

भजन संहिता 44:5 : "तेरे ही सहारे से हम शत्रुओं को पीछे खदेड़ देंगे, तेरे नाम से हम अपने विरोध में उठने वालों का कुचल डालेंगे।"

स्ट्रोंग का शब्दानुक्रमणिका # 5055 (naw - gakh) 'नौ गख', मूलतः, सींग से पीछे धकेलना ; लाक्षिणिक प्रयोग का अर्थ ; विरुद्ध यद्ध करना।

च) प्रार्थना स्वर्गदूतों को खोलती और दुष्टात्माओं को बांधती हैं

स्वर्गदूतों का यह कार्य है कि वो :
1. प्रभु की सेवा और आराधना करें। इब्रानियों 1:4, 6–7,
2. उद्धार पाने वालों की सेवा। इब्रानियों 1:14

- इब्राहीम लूत के लिए प्रार्थना करता है – स्वर्गदूत उसे छुड़ा लेते हैं। : उत्पत्ति 19
- शत्रु सेना के द्वारा एलीशा को घेर लेना : 2 राजा 6:17
- सिंह की मांद में दानिय्येल। दानिय्येल 6:22
- दानिय्येल का तीन सप्ताह का उपवास और प्रार्थना : दानिय्येल 10:2,13
- हिजकिय्याह ने प्रार्थना की, स्वर्गदूतों ने 185000 अश्शूरयों को मौत के घाट उतार दिया : यशायाह 37:21, 36
- प्रेरितों को बन्दीगृह से छुड़ाया : प्रेरितों के काम 5:19 ; 12:5–10

हमारे ईश्वरीय हथियार (क्रमागत)

2. आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है। इफिसियों 6:17

क) यह सामर्थी है :

इब्रानियों 4:12 : " ... जीवित, प्रबल, और किसी भी दोधारी तलवार से तेज़ है ..."

यशायाह 55:11: "वह व्यर्थ ठहर कर मेरे पास नहीं लौटेगा, वरन्मेरी इच्छा पूरी करेगा।"

यिर्मयाह 23:29 : "क्या मेरा वचन आग के समान नहीं, और ऐसा हथौड़ा नहीं ..."

प्रकाशितवाक्य 1:16 : "उसके मुख से दोधारी तेज़ तलवार निकलती थी।"

1 थिस्सलुनीकियों 2:13 : "परमेश्वर का वचन, जो तुम विश्वासियों में अपना कार्य भी करता है।

भजन संहिता 107 : 20 : "उसने अपना वचन भेज कर उन्हें चंगा किया।"

मत्ती 8:8 : " हे प्रभु , ... केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।"

यीशु ने आंधी से , अंजीर के वृक्ष से, लाज़र से बात की।

उसका रिह्मा वचन सहभागिता/ प्रार्थना के द्वारा आता है। इफिसियों 6:18

- यिर्मयाह 1:7–10, 12, 17 ; यहेजकेल 37:1–10
- याकूब 5:17 ; 1 राजा 17:1 ; 18:1

ख) हम तलवार का इस्तमाल कैसे करें :

- अय्यूब 22:28
- मरकुस 11:12–14, 20–25
- निर्गमन 3:18 से आगे
- 1 शमूएल 17:33–37, 43–47
- यशायाह 42:22 ; 49:9

मत्ती 16:18–19 कूंजी = अधिकार (राज, सरकार)
"मैं तुझे परमेश्वर की सरकार का राज दूंगा ; और जो कुछ तू पृथ्वी पर मना करेगा (इन्कार या बन्द) वह स्वर्ग में वर्जित या बन्द हो जाएगा।"

इसका मतलब, परमेश्वर की सरकार और अधिकार हमारे कार्य का समर्थन करेगी।

यह तब होगा जब हम इसकी घोषणा करेंगे।

तथापि : वचन को बोलना – आत्मा की तलवार अधिकार के साथ – आपको अधिकार में रहना है !

मत्ती 8:8–10 : " परन्तु सूबेदार ने उत्तर दिया, "हे प्रभु , मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरे छत तले आए, परन्तु केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। क्योंकि मैं भी शासन के अधीन हूं , और मेरे अधीन सिपाही है। जब मैं एक से कहता हूं, ' जा ! ' तो वह जाता है और दूसरे से, 'आ' तो वह आता है और जब अपने दास से कहता हूं, ' यह कर' तो वह करता है।"

अधीनता में रहने के लिए हमें प्रभु की आज्ञाएं माननी है, जो आज्ञा वह देता है उसको मानना और करना। "तेरी इच्छा पूरी हो।"

"अनुमति" के अधिकार का अर्थ है कि पवित्र आत्मा की अगुवाई के द्वारा घोषणा के द्वारा परमेश्वर हमारे लिए नए स्थानों को खोलना चाहता है जहां के द्वार अब तक बन्द है।

ग) दुष्टात्माओं को निकालना : मत्ती 10:1, 7–8 ; 17:14–21 ; लूका 10:17–20

घ) बिमारी रोकना

ङ) व्यक्ति के जीवन के ऊपर दूष्टात्माओं के अधिकार को रोकना।

कलिसिया की उन्नति और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए सफल सुसमाचार प्रचार, आत्मिक युद्ध पर निर्भर है।

मत्ती 16:18 : "मैं अपनी कलिसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।"

उत्पत्ति 22:17 : तेरा वंश अपने शत्रु के फाटकों पर अधिकार कर लेंगा।"

- गलातियों 3:29 : " और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम की सन्तान और प्रतिज्ञा के अनुसार उत्तराधिकारी भी।"
- स्वामित्व – अपना कर लेना, अपने अधिकार में रखना।
- फाटक – राज्य अधिकार का स्थान।
  - रुत 4:1, 10–11
  - 1 राजा 22:10 इन राजाओं को दिया गया या लिया गया। अधिकार, नियंत्रण, शासन का स्थान ।

अमोस 5:15 : " बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो। फाटक में न्याय को स्थिर करो ! कदाचित यूसुफ के बचे हुओं पर सेनाओं का परमेश्वर यहोवा अनुग्रह करे।"

मत्ती 16:19 : "मैं तुझे ..... कुंजियां दूंगा।"

- अधिकार / ज़िम्मेवारी
- द्वार खोलें / बन्द द्वार

मत्ती 16:19 : " और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा।"

3. यीशु का नाम। ईश्वरीय हथियार

फिलिप्पियों 2:9–11 प्रेरितों के काम 3:6 ; 15–16 ; 4:10 ; 9:34 ; 16:16–18
1 शमूएल 17:45 मरकुस 16:17
रोमियों 10:13 2 इतिहास 14:11
भजन संहिता 44:5 उदाहरण : लूका 10:17–20

4. स्तुति की सामर्थ्य

निर्गमन 15:10–11	" स्तुति में भय योग्य"
भजन संहिता 22:3	" परमेश्वर स्तुति में विराजमान है।"
भजन संहिता 149	यशायाह 42:10–13
भजन संहिता 8:2 तथा मत्ती 25:16	भजन संहिता 76:1–3 ; यहूदा = स्तुति
प्रेरितों के काम 16:22	2 इतिहास 20:22

5. प्रचार की सामर्थ्य

रोमियों 1:15–16
1 कुरिन्थियों 1:17–24

कलिसिया की स्थापना करना – वेदी बनाना – जहां प्रभु की आराधना हो सके।

यह है : कलिसिया स्थापित करना।

इब्राहीम : उत्पत्ति 12:7 ; 12:8 ; 13:18
इसहाक : उत्पत्ति 26:23–25
याकूब : उत्पत्ति 28:12–13 ; 17–19 ; 33:18–20 ; 35:13–15
हम इब्राहीम के " वंशज " हैं। गलातियों 3:29

6. साक्षी की सामर्थ्य – "साक्षी होना" प्रकाशितवाक्य 12:11

7. उपवास की सामर्थ्य मत्ती 6:16–18 ; 9:14–15

क) कि सेवकाई की सामर्थ्य प्राप्त करें लूका 4:1–2, 14

ख) व्यक्तिगत प्रकाशन : लूका 2:36–38
हन्नाह ने देखा, दूसरों ने केवल वही सुना जो उसने बोला।

ग) सेवकाई में बुलाहट और भेजना प्रेरितों के काम 13:1–4

घ) देह पर विजय

भजन संहिता 35:13	दाऊद ने अपने आप को दीन किया।
गलातियों 5:17	शरीर की लालसाओं के विरुद्ध एक ज़ोरदार प्रहार

ङ) आत्मिक युद्ध

यशायाह 58:6	
1 शमूएल 7:3–10	देवताओं को हटाया, उपवास किया, प्रार्थना की, शत्रु को पराजित किया।
2 इतिहास 20	
मत्ती 17:14–21	"परन्तु यह जाति प्रार्थना और उपवास के अतिरिक्त अन्य किसी उपाय से नहीं निकलती।

6. व्यावहारिक – आत्मिक युद्ध

परमेश्वर से आत्माओं की परख मांगें।

1. इस स्थान पर क्या गलत था ?
2. ऐसा कैसे हुआ ?
3. क्या हो सकता है ? जैसे यहोशु – हर एक नगर अलग रीति से लिया।
4. " वैध द्वारों " का ज्ञात करें जिनके कारण शैतान अपने गढ़ स्थापित कर पाया। क्या पाप ? जिनके कारण "नगर के द्वारों " पर शैतान का नियंत्रण होने पाया।

5. पापों को कैसे खोजें ?

- नगर क्यों स्थापित हुआ था ?
- नगर का नाम कैसे पड़ा ?
- उस जगह रहने वाले पहले निवासी कौन थे ?
- उनको क्या हुआ ?
- सरकार में क्या भ्रष्टाचार है ?
- क्या कोई नारा या स्लोगन है ?
- किन सिद्धांतों पर नगर की स्थापना हुई थी ?
- धार्मिक कपट का कोई प्रमाण है ?
- भौतिक विपदा।
- संगीत, संसकृति, वास्तुकला का अध्ययन।

साथ मिल कर पाप का पश्चात्ताप करना चाहिए।

एक मध्यस्थ अपने नगर के फासले के बीच में खड़ा होता है।

- दानिय्येल 9:3 +
- नहेमायाह 1:7
- एज्रा 9:5–15

हम अपनी जगह या क्षेत्र के राजदूत हैं।

- यूहन्ना 20:23 ; 2 कुरिन्थियों 5:20

7. गढ़ पर विपरीत दिशा से आक्रमण करो / भक्तिपूर्ण आत्मा का फल
रोमियों 12:21 : "... ... भलाई से बुराई को जीत लो।"

जैसे : लालच को देने के द्वारा
घमण्ड को दीनता के द्वारा

8. समय अत्यंत आवश्यक है। यूहन्ना 17:1

- प्रार्थना की टोली आगे बढ़ाऐं। लूका 10:1 , 18–20
- उपवास की टोली आगे बढ़ाऐं।
- आत्मा की तलवार का इस्तमाल करते हुए।
  बांधते / खोलते लूका 11:20–22
- अगुवे अपने लोगों को आत्मिक युद्ध की शिक्षा दें
- 2 कुरिन्थियों 10:4

9. आत्मा की तलवार का प्रयोग

- हर एक जो टोली में है उसकी तथा उसके परिवार की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें। पढ़ भजन संहिता 91। अपने को नम्र करें और घुटने टेकें। यह मान लें कि हम में सामर्थ्य और अधिकार नहीं हैं, परन्तु सारी सामर्थ्य और अधिकार प्रभु यीशु के नाम में है।
- लोगों, सरकार, व्यवसाय आदि पर पापों को स्वीकारें और क्षमा मांगें।
- प्रबल अभिषेक के साथ स्थायी अगुवा क्षेत्रिय दुष्टात्माओं के विरुद्ध दृढ़ विश्वास में अगुवाई करे। उनको बांध दे – निषेद्ध कर दें – उनकी शक्ति को तोड़ डालें। आज्ञा दें कि वो रुकें , निकलें , चले जायें।

  खोलें – अनुमति दें – उसके विपरीत को छोड़ दें या भक्तिपूर्ण आत्मा को रिक्त में भर जाने दें। मत्ती 12:44–45
- प्रत्येक एकता में एक साथ खड़े हों जैसे सहमति में एक है।

घोषणा

व्यवस्थाविवरण 32:8 परमेश्वर ने आपको यह भूमि दी है।
जैसे उसने इस्राएल को कनान दिया था। इसके लिए आपको लड़ना है।

भजन संहिता 2:8	परमेश्वर से उसे मांग लें। यह आप का प्रतिज्ञा किया स्थान है।
गिनती 13–14	अच्छी ख़बर बोलो।
अय्यूब 22:28	बता दें
मरकुस 11:22–24	जो कोई कहे
इब्रानियों 10:23	" आओ, हम अपनी आशा के अंगीकार को अचल हो कर दृढ़ता से थामें रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह विश्वासयोग्य है।"
रोमियों 4:17	जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है मानो वे हैं।

बौद्ध की दीवारें नीचे गिर जाएंगे !!!

उद्धार की दीवारें खड़ी की जाएंगी !! यशायाह 60:18

महिमा का राजा भीतर आएगा !!

7. ग्रंथ – सूची

Breaking Strongholds In Your City by : C. Peter Wagner Regal Books
Spiritual Warfare by : Dean Sherman YWAM Publishing
Redeeming The Land by : Emeka Nwankpa African Christian Press

8. उत्पत्ति की शिक्षा

1 कुरिन्थियों 10:11 : "ये बातें उन पर उदाहरणस्वरुप हुई, और ये हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई जिन पर इस युग का अन्त आ पहुंचा है।"

उत्पत्ति 11 बाबेल की मीनार

सब लोग स्वयं को शैतान की पूजा के लिए देते हुए। उनकी एकता / सहमति ने उनकी बुराई को बल दिया। इस बुराई में शैतान का अनुसरण कर, वह शैतान को उनके ऊपर (ख़ज़ाना) और उनके क्षेत्र में राज (सिंहासन) करने का वैध अधिकार दे रहे थे।

उत्पत्ति 12 अब्राम को बुलाया

पुन : अधिकार में लेने के लिए परमेश्वर की युद्ध योजना :

- उसका जगत का सिंहासन : उपासना का उचित स्थान
- उसका ख़ज़ाना : लोग
- उसका क्षेत्र : भूमि

1. मनुष्य को बुलाया कि वो उस स्थान पर जाये जिसे परमेश्वर ने चुना और उसको देगा। अब्राम ने आज्ञा मानी।

पहला कदम : सुनो – मानो – जाओ।

2. पद 7–8 ; 13:3–4, 18 वेदी बनाई

दूसरा कदम : कलिसिया की स्थापना (आराधना का स्थल)

उत्पत्ति 13 पारिवारिक झगड़े

तीसरा कदम : पारिवारिक झगड़े से बचें। शत्रु का आक्रमण। याकूब 3:13–16

अगुवे को तैयार रहना चाहिए कि शान्ति और सही सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कुछ भी बलिदान कर सके। अपना उत्तम दें। अपना अधिक दें, तैयार रहें कि आप शान्ति के लिए सम्बन्धों में तनाव को छोड़ दें और ताकि शत्रु को पैर रखने का स्थान न मिल सके।

उत्पत्ति 14 पृथ्वी के राजा क्षेत्र/ख़ज़ाने/ सिंहासन के लिए लड़ रहे हैं।

अब्राम उनकी हरकतों में नहीं उलझा जब तक कि उन्हों ने परिवार में से एक को कैदी न बना दिया। तभी एक दम से पूर्ण युद्ध हुआ।

युद्ध के बाद वह दो राजाओं से मिला :

1. मलिकिसिदक (धार्मिकता का राजा) शालेम का राजा (शान्ति) परमप्रधान परमेश्वर (एल एल्यों) का याजक। वाचा का भोज लिया। एल एल्यों, "स्वर्ग और पृथ्वी के अधिकारी" ने अब्राम को आर्शीवाद दिया। अब्राम ने अभी "स्वर्ग और पृथ्वी के अधिकारी" के लिए वो पुनःप्राप्त किया था जो उसकी अमानत थी।

चौथा कदम : आत्मिक युद्ध हमने एल एल्यों को जाना।

2. एक दम से सदोम का राजा आता है – "लोगों को मुझे दे और सम्पत्ति अपने लिए रख।" शैतान कुछ भी देने का प्रस्ताव रख सकता है, संसारिक धन, कि 'बड़ा खज़ाना' रखें। शैतान के प्रस्ताव में से कुछ लेना, हमें कमज़ोर बनाता है और भविष्य की पराजय के लिए द्वार खोल देता है। पद 22–23

पांचवां कदम : लालसाओं का सामना करते हुए, हमें संसार की वस्तुओं के लिए अपने प्रेम पर जय पाना है। 1 यूहन्ना 2:15–16 ; गलातियों 5:24

उत्पत्ति15 अधिक प्रकाशन – अधिक प्रतिज्ञाएं

अधिक समपर्ण / विश्वासयोग्यता का परिणाम।

छठा कदम : सारे प्रबन्ध के लिए परमेश्वर पर हमेशा भरोसा रखें।

मत्ती 6:33

लूका 16:10–13 "... दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता ..."

उत्पत्ति 16 शरीर का परिणाम – इश्माएल

सातवां कदम : जब परमेश्वर चुप है – परमेश्वर की प्रतीक्षा करो।

यशायाह 40:31

सपन्याह 3:17

उत्पत्ति 17 ख़तना की वाचा

परमेश्वर "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के रुप में प्रकट हुआ।

उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। कई जातियों का मूल पिता।

चिह्न : ख़तना – इसमें के द्वारा वह पिता बना। यौन मिलन की पवित्रता। उसकी सन्तान प्रभु की होंगी।

आठवां कदम : आत्मिक सन्तान उत्पन्न करो।

उत्पत्ति 18:17– 33 नगर, लोगों या क्षेत्र की मध्यस्थता का स्थान और महत्व।

नौंवां कदम : मध्यस्थता

उत्पत्ति 22 इसहाक का बलिदान

दसवां कदम : अपना क्रूस उठा लो। मत्ती 10:37:38

पद 17 "तेरे वंशज अपने शत्रुओं के नगरों पर अधिकार कर लेंगें।"

विजय !!!!